विजयदांन देथा की बातों का तात्विक विश्लेषण

*डॉ. गोकुल चन्द सैनी

जिस प्रकार नाटक, एकांकी और उपन्यास आदि में तत्व माने जाते हैं उसी प्रकार बात या कहानी में भी कुछ तत्व मौजूद होते हैं उसी प्रकार बात ाया कहानी में भी कुछ तत्व मौजूद हेाते हैं। जिसके आधार पर बात या कहानी की सफलता निश्चित की जाती है। देथा जी बातों में प्रमुख तत्व इस प्रकार से हैं–

क. कथावस्तु

बात–कहानी कहने और सुनने की परम्परा मानव ने जब से धुटनों के बल चलना सीखा होगा तभी से चली आ रही है। कहानी के आरम्भ काल में कथावस्तु ही सब कुछ हुआ करती थी, किन्तु ज्यों–ज्यों कहानी कला में विकास होता गया त्यों–त्यों कथा तत्व का स्थान गौण होता जा रहा है। कहानी में कथावस्तु का स्थान मुख्य है, क्योंकि यही कहानी का वह ढ़ांचा है जिस पर कहानी निर्मित होती है। वस्तुतः कथावस्तु का जन्म कहानीकार की उन अनुभूतियों और लक्ष्यात्मक प्रवृति से होता है जिसके धरातल अथवा मूल प्रेरणा से कहानीकार अपनी कहानी का निर्माण करने बैठता है। अगर अनुभूतियां घटनाओं अथवा कार्य व्यापारों की श्रंखला से निर्मित हुई है तब उनके प्रकाश में कथावस्तु का रूप कहानी में मुख्य होगा और कथानक पूर्ण इतिवृतात्मक होगा। कथावस्तु के बारे में क्षेमेन्द्र सुमन ने कहा है कि वस्तुतः कहानी के शरीर में कथावस्तु हडिडयों के सदृश हैं। यदि भाषा, भाव, चरित्र–चित्रण या शैली इत्यादि सब तत्व कहानी में विद्यमान हों और कथावस्तु विद्यमान न हो तो वह कहानी अस्थिरहित. शरीर के सदृश होगी हि विजयदांन देथा ने 'बातां री फलवाड़ी' के समस्त भागों में जितनी भी बातें लिखी हैं, वे कथानक की दृष्टि से बहुत ही सरल व सुबोध हैं। इनको छोटे अबोध बालक से लेकर बड़े बुजुर्ग तक सभी आसानी से समझ सकते हैं। देथा जी की इन बातों में रस कस दिया जले' 'दुमकटा भाई', 'जूना साँप', 'बेटा किसका'? 'लिखे लेख टलें', 'एक नुगरा साँप', 'फूलकुवर', 'बड़ा कौन'? 'रोटी की बात' 'परख' व 'बुरा और भला' आदि प्रमुख हैं।

बातों के कथानक घटनाबाहुल्य वाले हैं, जैसे– 'दोहरी जिन्दगी', 'हिम समाधि', 'कान्ह गुवाल', 'दिवाले की बपौती' और 'मूंजी अवतार' आदि। घटनाओं में गति बनी रहती है। यों भी बातें कहने की वस्तु है, इसलिये घटनाओं का वर्णनात्मकता इसका आवश्यक गुण है। इनकी बातें छोटे (मेहनत सारख पिताजी अंटीमें, सौ का भाई साथ, साधु की कमाई व हरड़ धम्म आदि कहानियां) और बडे (गोगे की मिठाई, गुणवंती, गुठिया राजा व मरीचिका आदि कहानियां) दोनों रूपों में मिलती है। किन्तु कथानक की सभी स्थितियों का निर्वाह दोनों प्रकार की बातों में भली प्रकार देखा जा सकता है। कथावस्तु ही एक तरह से कथा का संगठन करती है। कहानी चाहे घटना प्रधान हो चाहे चरित्र प्रधान हो या भाव प्रधान हो कथावस्तु चरित्र की रेखाओं में, स्थूल–पात्र में, घटना अथवा कार्य व्यापार की श्रंखला में चरितार्थ तो होती हीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि कथा के बिना कहानी होगी ही कैसे, और

कथानक तो एक प्रकार से कथा ही तो है परन्तु वह लेखक की भावुकता और कल्पना के सहारे विकसित होता रहता है। कथानक की दृष्टि से इनकी बातों को तीन भागों में बांटा जा सकताः–

1. सामाजिक 2. राजनैतिक 3. आर्थिक

1. सामाजिक बातों में समाज की समस्याओं को प्रस्तुत किया जाता है। इस दृष्टि से देथा जी की बातों में 'दिवाले की बपौती', 'विश्वास की बात', 'रोटी की बात', 'गोगे की मिठाई' 'घर के पास घर', 'अनेकों हिटलर' 'दूजौ कबीर' 'अपनी–अपनी खुशबु', 'आखिरी कसर' आदि हैं।
2. राजनैतिक– इस प्रकार की बातें राजनैतिक जीवन से ओत–प्रोत दिखाई देती हैं। इस दृष्टि से देथा जी की 'दूजौ कबीर', 'रैनादे का रूसना', 'बेदाग चिकनाहट' 'उजाले के मुसाहिब', 'जंजाल' 'गुठिया राजा', 'सपनप्रिया' व 'खीरवाला राज्य' आदि प्रमुख हैं।
3. आर्थिक – इस प्रकार की बातें अर्थ प्रधान होती हैं। देथा जी की

इस प्रकार की बातों में 'आशा अमरधन', 'दिवाले की बपौती', 'जाप की महिमा', 'अनेकों हिटलर' व 'समय–समय की हवा' आदि बातें प्रसिद्ध है।

ख. चरित्र–चित्रण

कथावस्तु के बाद चरित्र–चित्रण कहानी का द्वितीय आवश्यक एवं महत्वपूर्ण तत्व है। पात्र वस्तुतः कहानी के सजीव संचालक होते हैं। पात्रों के माध्यम से एक ओर कथानक का आरम्भ विकास और अन्त होता है, तो दूसरी ओर हम कहानी में इनसे आत्मीयता प्राप्त करते हैं। कहानी में पात्रों के सम्बन्ध में डॉ. लक्ष्मानारायणलाल ने कहा है कि हनी में चरित्र–चित्रण का महत्व सबसे अधिक है क्योंकि कलात्मक दृष्टि से एक ओर कहानी की संक्षिप्त सीमा के कारण चरित्र का विकास दिखाने का अवसर बहुत ही कम रहता है और दूसरी ओर चरित्र–चित्रण की संभावनाएं इतनी सीमित रहती हैं कि उनके चित्रों को स्पष्ट करना परम हस्तलाघव की परीक्षा है। पात्र ही कथावस्तु के सजीव संचालक होते हैं। अगर पात्र नहीं तो कहानी नहीं और बिना चरित्र–चित्रण के कहानी अधूरी ही समझी जायेगी। जिस प्रकार से एक गूंगा एवं बहरा व्यक्ति रूप और रंग से कितना ही सुन्दर हो– चाहे उसने कितनी बढ़िया पोशाक पहन रखी हो वह हमें अच्छा नहीं लगेगा उसी प्रकार से कहानी का कलेवर कितना ही बढ़िया हो, उसमें चाहे कितने ही गुण मौजूद हों, किन्तु जब तक उसमें सम्यक चरि,त्र–चित्रण नहीं हुआ होगा तब कि वह हमें अचछी नहीं लगेगी।

इस बात का देथा जी ने अपनी बातों में विशेष ध्यान रखा है। इनकी बातों चरित्रों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि इनकी कुछ बातों में तो दो या तीन पात्र हैं (जिनमें मेहनत सार, पिताजी अंटी में, गुरू की सीख, मै री मैं और तिनके ने घर डुबोया आदि कहानियां) और कुछ बातें ऐसी हैं जिनमें पात्रों की संख्या चार से लेकर सात–आठ के बीच में है (इस प्रकार की बातों में मौके की सूझ, वैतरणी, खटकरम, दूजी कबीर, अनेकों हिटलर और केंचुली आदि प्रमुख है।)

इनकी बातों के चरित्रों को चार भागों में बांटा जा सकता है–

1. मानवीय चरित्र 2. भूत–प्रेत–दैत्यादि से सम्बन्धित चरित्र 3. परियों से सम्बन्धित चरित्र और 4. पशु–पक्षियों से सम्बन्धित चरित्र।

1 मानवीय चरित्र– मानवीय चरित्र वे चरित्र हैं जो मानव रूप में कथाओं में व्याप्त हैं। इस प्रकार के चरित्रों को लेकर लिखी गई देथा जी बातों में 'दबदबा', 'अनेकों हिटलर', 'राजीनाम', 'अपनी–अपनी खुशबु', 'आशा अमरधन' और 'दिवाले की बपौती' प्रमुख हैं।

2. भूत–प्रेंत– दैत्यादि से सम्बन्धित चरित्र –इस प्रकार के चरित्र प्रायः मानव जाति को कष्ट देते हुए दिखाई देते हैं। इन चरित्रों को लेकर लिखी गई देथा जी की बातों में 'बाजरा लेगा या आटा', 'सातों को कटक जाऊँ, ठाकुर का भूत' और 'दुविधा' प्रमुख है।

3. परियों से सम्बन्धित चरित्र – इस प्रकार के चरित्र मानव की सहायता

करने वाले हेाते हैं। देथा जी की ऐसी कथाओं में आसमान जोगी, लीलगर री बेटी व गधा रो खौलियो प्रमुख है।

4. पशु–पक्षियों से सम्बन्धित चरित्र– पशु–पक्षियों के चरित्रों को लेकर लिखी गई देथा जी की कहानियों में 'सावचेती', 'कागमुनि', 'अहेरी', 'चल म्हारी ढ़ेमकी ढ़माक ढ़म एवं 'सीधा हिसाब' हैं।

इन बातों में घटनायें ही मुख्य रूप से आयी हैं – पात्र घटनाओं के सहारे चलते हैं। पात्रों का चरित्र–चित्रण है अवश्य किन्तु घटनायें ही उनके चरित्र को दर्शाती हैं। चन्द बातें ही ऐसी मिलेंगी जिनमें पात्र अपने स्वयं के व्यक्तित्व के कारण उभर आये हों। किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि इन बातों में पात्र केवल कठपुतली मात्र ही रहे हैं – थोड़ा थोड़ा चरित्र हमें इनकी हर बात में मिल ही जाता है।

ग. कथोपकथन या संवाद

कथोपकथन या संवाद की बात या कहानी का एक प्रमुख तत्व है। यदि किसी बात में संवाद न होकर केवल वर्णन ही होंगे तो उस बात के पात्र अव्यक्त रह जायेंगे तथा प्रभावशीलता एवं संवेदउनशीलता नष्ट हो जायेगी तथा यदि केवल संवाद ही होंगे तो वह बात न रहकर एकांकी नाटक बन जायेगी। अतः बात में संवाद वर्णन में समन्वय होना चाहिये। कथापकथन संवाद या वार्तालाप के सम्बन्ध में 'हिन्दी साहित्य कोश में कहा गया है कि 'कथोपकथन में प्रयुक्त शब्दों से ही नहीं, उनके स्वराघात या लहजे, लय और प्रवाह शैली अनुरंजकता एवं अलंकरण, सभी के सम्मिलित प्रभाव से सम्पन्न होता है। कथोपकथन के द्वारा ही विभिन्न पात्रों में एक–दूसरे के विरूद्ध संतुलन पैदा होता है तथा प्रत्येक के चरित्र–चित्रण में परिपूर्णता आती है। पात्रों के परस्पर वार्तालाप को ही संवाद कहा गया है। पात्रों के वार्तालाप से कथा का संघटन होता है। चरित्र से भी पाठक या श्रोता तभी जुड़ता है, जब उसकी क्रियाओं और वार्तालाप से वह पूर्ण परिचित हो जाता है। इस दृष्टि से विजयदांन देथा की कुछ बातें बड़ी ही महत्वपूर्ण हैं, जिनमें– 'बनिये का गुरू' ' गंवार का सपना', 'चौधराइन की चतुराई', में पड़ी चूल्हे में, 'अनेकों हिटलर', 'राजीनामा' 'दूजौ कबीर', 'बेदाग चिकनाहट' और 'समय की हवा' आदि हैं। कथोपकथन की भी कुछ विशेषताएं निश्चित की हैं जिनमें संक्षिप्त व सरल व पात्रानुकूल संवाद को उचित ठहराा गया है। संक्षिप्त व सरल कथोपकथन का एक उदाहरण इनकी 'बनये का गुरू' कहानी में देखा जा सकता है, जिसमें लकड़ी बेचने वाले एक चौधरी और सेठ का वार्तालाप दृष्टव्य है–

'सेठ ने पूछा, बाबा गाड़ी का क्या लेगा?'
चौधरी ने कहा, श्एक ही दाम बता दूं?
पूरे पांच रूपये लूंगा। कमी–बेशी मत करना।
सेठ ने कहा, बाबा तूने कहा है तो पूरे पांच ही
दूंगा। चल जल्दी कर। मेरी हवेली दूर है।

कथोपकथन या संवाद कथा को गतिप्रदान करने वाले, भाषा शैली का निर्माण करने वाले तथा पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करने वाले होते हैं जिससे कथा उच्च कोटि तक पहुँचती है। इस दृष्टि से 'दूजौ कबीर' कहानी का यह उदाहरण दुष्टव्य है, जो कथा को गति प्रदान करने के साथ–साथ पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं से भी युक्त है। जैसे–"लोगों ने जबाब दिया कि गांव तो मालिकों का है, पर कबीर यहीं रहता है। राजकुमारी का उत्साह गले में समाया नहीं। बेहद ललक से फिर पूछा, 'वाकई?' बस्ती के लोगों ने गर्दन हिलाकर हाँ की और 'हाँ' के साथ ही रजाकुमारी फौरन दौड़ कर राजा के पास पहुँची। खुशी के फूल बरसाती बोली, 'इत्तफाक की बात कि अपन ने कबीर के गाँव में अचीता पड़ाव डाला। आपकी इजाजत हो तो मैं उसकी कारीगरी देखने के लिये जाऊँ।

राजकुमारी के मुंह से यह नादानी की बात सुनकर राजा कुछ देर तक टग–मग उसके चेहरे की ओर देखता रहा। राजा के मौन को कुरेदकर फिर पूछा, जाऊँ? राजा मुस्कराते हुए बोला, तू बेकार क्यूँ तकलीफ उठाती है, मैं उसे यहीं बुला लेता हूँ।

इस प्रकार इस उदाहरण में राजकुमारी द्वारा कबीर की कारीगरी को जानना और राजा द्वार कबीर को अपने पास बुलाने का वृतान्त कथा को गति प्रदान करने के साथ–साथ पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं से भी युक्त है। कथोपकथन या संवाद की दृष्टि से अगर देथा जी के समस्त बात साहित्य का मूल्यांकन किया जाये तो उसमें वे सभी गुण विद्यमान हैं जो श्रेष्ठ संवादों मे होते हैं।

घ. भाषा–शैली

भाषा शैली वस्तुतः भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। अतः भाषा–शैली के लिए यह आवश्यक है कि वह सहज सरल एवं बोधगम्य हो। दुर्बोध भाषा और भ्रष्ट शैली के प्रयोग से कोई भी रचना लोक–जीवन में समादृत नहीं हो सकती। इस सम्बन्ध में लक्षीनारायणगलाल का कथन है "भाषा शैली कहानीकार के मनोभावों की अभिव्यक्ति का एकमात्र साधन है। इसी के आधार से हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि अमुक कहानी सरल, सरस और सुबोध शैली में है तथा अमुक कहानी गूढ़, अस्पष्ट तथा दुर्बोध शैली में है। विजयदांन देथा की 'बातां री फुलवाड़ी' की सभी बातें जनभाषा (राजस्थानी) अर्थात बोलचाल की भाषा में लिखी गई है। इनकी लालित्यपूर्ण भाषा एक दाहरण इस प्रकार है– दो–तीन हिाडे ते नेठाव राख्यौ। जाण्यौं, कदास डाली निवैला। पण सांपा रै किसी साख। दूखै जिगरै दूखाणों अर पाकै जिणरै पीड़। अै बाबू लोग कदैई किणी रा व्हिया? बाढ़ी आंगली माथै ई को मूतैनीं। जिलोरू किण सूं साख पाले। अै तो नेम धार लियो कै सूंक टाल सगै बाप रौ ई काम को करणो नी। आंरा सू फेर कांइ बण आवै। ऊंदरी रा जाया तो दरड़ा ई खोदेला। कागलो तो बींट ई करैला। अै बाबू तो सुनार लखणा, आपरी मां रा ई हांचल बाढ़ लेवै। म्हारी अकल तकात कह्यो को कर्यों नी। जमीं सूता आकास चाटै। मन में महाराजा बण्योड़ा। पाधरो परलो जोर जतावै। काकै री पीयोडी, भतीजां नै उगै। मिनख नै मिनखई को मानै नीं। फगत आप री मारयोडी ने हलाल गिणै। पण संसार में बड़ाबड़ी रो खैल है। किणी ताण अफसर रो टेलीफून आयो। फटाफट काम व्हैगो। आकरादेव ने से कोई निवै। म्है च्यार, पांच दिनां में भली भांत पतवांणली के लाठी जिणरी भेंस। लांठां री सकरांमत है। पईसां री खीर है। लांठां रो डोको डांग फाडे। गरीबां री कठै ई दाद फरियाद कोनी। दूबलो जेठ देवरां बिरोबर।" अत्यन्त सरल, सुबोध और सुग्राह्य शैली में लिखी जाने के कारण इनको बातें राजस्थान के किसी भी अंचल में पढ़ी व समझी जा सकती हैं। छोटे–छोटे सुगठित वाक्याँशों में लिखी ये बातें भाषा की व्यंजनाशक्ति के दर्शन कराती हैं। राजस्थान जीवन के लोकरंगों को दिव्दर्शित करती ये बातें, एक पूरे कालखण्ड का सांस्कृतिक इतिहास कही जा सकती है। इन बातों के सम्बन्ध में मणिमधुकर की मान्यता है कि 'बातों के प्रकाश में मनुष्य अपने चेहरे के रूप–अरूप को भली भांति उलट–पुलट कर देख सकता है। देथा जी की बातों की शैल्पिक विशेषताओं में

वर्णन की प्रधानता प्रमुख रूप से देखी जा सकती है। इस आधार पर इनकी बातों की शैली वर्णनात्मक तो है ही, इसके अलावा चित्रात्मक, भावात्मक एवं विवरणात्मक शैलियों का प्रयोग भी देखने को मिलता है।

ड. देश–काल और वातावरण

कहानी की वातावरण वास्तविक जीवन, देश काल तथा जीवन की विभिन्न प्रवृतियों से निर्मित होता है। यह भौतिक और मानसिक दोनों प्रकार का होता है तथा इससे कहानी में यथार्थता आ जाती है। वातावरण, कहानी में रंगमंच का सा काम करता हैं। वातावरण, कहानी में रंगमंच का सा काम करता है। नाट्य कला में नाटक की स्थिति और वातावरण के लिए रंगमंच, विशेष पर्दे, सजावट और अभिनेताओं की वेशभूषा आदि कार्य करते हैं, लेकिन कहानी कला, पठन पाठन की वस्तु होने के कारण इसमें स्थिति और वातावरण के लिए स्थान–स्थान पर यथोचित देश–काल परिस्थिति के चित्रण प्रस्तुत करने होते हैं। कहानी में जो दृश्यों का वर्णन है वो एक प्रकार से नाटक के पर्दों का काम दे देता है। वातावरण में स्थानीय वर्णन कहानी के सौन्दर्य की अभिवृद्धि ही नहीं करता बल्कि इसके द्वारा पाठक कहानी में सतत आकर्षित और प्रेरित रहता है।

इनकी बातों के वातावरण में मध्यकालीन राजस्थान व सीमावर्ती मालवा व गुजरात क्षेत्र की साफ छवि देखने को मिलती है। इनसे तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थितियों का भी भली–भांति पता चलता है। वातावरण के चित्रण में स्थानीय लोकरंग को भी देखा जा सकता है। देथा जी ने वातावरण चित्रण में लोकरंग की अवहेलना नहीं की है। डॉ. पूनम दईया इसके सम्बन्ध में विचार करते है कि स्थानीय अनुरंजन का तात्पर्य केवल यही है कि पाठक या श्रोता इन बातों को जब पढ़े या सुनें तो उसे जो वर्णन चल रहा है उसमें यही मालूम हो कि यह वर्णन राजस्थानी का है। इस दृष्टि से देथा जी समस्त बातें स्थानीय अनुरंग से युक्त है। इन्होंन इन बातों तत्कालीन समाज का खूब अच्छा चित्रण किया है। यहां

की शासन प्रणाली, जागीर प्रथा, रूढ़ि निर्वाह, आमोद–प्रमोद, कलात्मक सृजन साहित्यिक वातावरण, नैतिक मूल्य, भाग्यवादिता और जीवन सिद्धान्तों का सर्वपक्षीय चित्रण आदि। देशकाल व वातावरण देथा जी की प्रायः हर बात में देखने को मिलता है। इनकी कोई भी ऐसी बात नहीं है जिसमें इसे देखा नहीं जा सकता। इस प्रकार वातावरण व स्थानीय लोकरंग इनकी बातों में अच्छी तरह से देखा जा सकता है।

च.. उद्देश्य

यह कहानी का अन्तिम तत्व है। जब कोई भी रचना लिखी जाती है उसका कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। यह उद्देश्य पाठकों के मनारंजन से लेकर किसी गम्भीर समस्या के समाधान, किसी प्रेरणा या संवेदना की अभिव्यक्ति अथवा किसी आदर्श की स्थाना करने तक हो सकता है। राजस्थानी बातों के उद्‌देश्य के सम्बन्ध में सूर्यकरण पारीक का मन्तव्य रहा है– संसार के सभी साहित्यों में जहां भी देखा जाये, क्या कहानी, क्या उपन्यास–नाटक, काव्य इन सभी में कल्पनात्मक प्रसंगों द्वारा वास्तविक तथ्यों को एक नवीन रागात्मक रूप दिया जाता रहा है। वही बात यहां इन कहानियों में समझनी चाहिये। विजयदांन देथा की बातों का मुख्य उद्‌देश्य – मनोरंजन कराना, उपदेशात्मकता, हास्योत्पादन, समस्या चित्रण, सुधार भावना, यथार्थ चित्रण, आदर्श स्थापना, नीति ज्ञान और अनुकरणीय चरित्रों को उजागर करना आदि है।

अभिप्राय अपना रंग बदलते हैं और भाषा की ऐसी निराली छटा दिखती है जो आज कथा साहित्य में दूभर है। देथा जी की भाषा अनुभव की भाषा है – तपे हुए अनुभव की। वह सूक्तियाँ गढ़ते चलते है और कहावतों तथा

लोकोक्तियों को बीच–बीच में मोती की तरह टांकते जाते हैं। देथा जी ने बड़े, बुर्जुगों, ग्रामाण और महिलाओं से इन बातों को जिस रूप में सुना उसी रूप में इन्होंने अपनी कल्पना के अनुसार अपनी भाषा अपनी शैली के द्वारा पुनर्सजित करके उन्हें आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नये रंग, नये आयाम और नये लाक्षणिक अर्थ प्रदान करके प्रस्तुत किया।

***व्याख्याता– हिन्दी**

स्वामी विवेकानन्द राजकीय महाविद्यालय,
खेतड़ी

संदर्भ

1. साहित्य विवेचन : क्षेमेन्द्र सुमन, योगेन्द्र मलिक, पृष्ठ–198
2. हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास : डॉ. लक्ष्मीनारायणलाल, पृष्ठ–331
3. हिन्दी कहानियों में शिल्प विधि का विकास : डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, पृष्ठ–340
4. चौधराइन की चतुराई : विजयदांन देथा, कहानी बनिये का गुरू, पृष्ठ–35
5. दुविधाः विजयदांन देथा, कहानी बनिये का गुरू ,पृष्ठ–35
6. हिन्दी कहानी में शिल्प विधि का विकास : लक्ष्मीनारायणलाल, पृष्ठ 308
7. अलेखू हिटलर (बातपोस) : विजयदांन देथा, पृष्ठ–183
8. जागती जोत, अप्रेल 183 (लोककथा री बणगट नै आज री कहाणी : मणि मधुकर), पृष्ठ–47
9. राजस्थानी बात साहित्य : डॉ. पनम दईया, पृष्ठ–111
10. राजस्थानी बात साहित्य : एक अध्ययन : डॉ. मनोहर शर्मा, पृष्ठ–122